GOVT. OF INDIA RNI NO.: UPBIL/2015/62096
UGC Approved Care Listed Journal
ISSN 2229-3620
SID

शोध संचार बुलेटिन

An International Multidisciplinary Quarterly Bilingual Peer Reviewed Refereed Research Journal

Vol. 10
Issue 39
July to September 2020

Editor in Chief
Dr. Vinay Kumar Sharma
D. Litt. - Gold Medalist

Sanchar
Educational & Research Foundation

GOVT. OF INDIA RNI NO. - UPBIL/2015/62096

ISSN-2229-3620

UGC APPROVED CARE LISTED JOURNAL

SID

JOURNAL OF ARTS, HUMANITIES AND SOCIAL SCIENCES

शोध संचार बुलेटिन

AN INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY QUARTERLY BILINGUAL PEER REVIEWED REFERED RESEARCH JOURNAL

* Vol. 10 * Issue 39 * July to September 2020

संपादक मण्डल

प्रो० योगेन्द्र प्रताप सिंह
लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ

प्रो० हेमराज सुन्दर
महात्मा गाँधी संस्थान, मोका, मॉरीशस

प्रो० अरूण कुमार भगत
महात्मा गाँधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय, मोतीहारी बिहार

प्रो० सुशील कुमार शर्मा
मिजोरम विश्वविद्यालय, मिजोरम

प्रो० संतोष कुमार शुक्ला
जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली

प्रो० पवन शर्मा
मेरठ विश्वविद्यालय, मेरठ

प्रो० करूणा शंकर उपाध्याय
मुंबई विश्वविद्यालय, मुंबई

प्रो० अरविन्द कुमार झा
बाबा साहेब भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय, लखनऊ

प्रो० पदम कान्त
लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ

प्रो० अर्जुन चव्हाण
शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर, महाराष्ट्र

प्रो० श्रद्धा सिंह
बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी

प्रो० नागेन्द्र अम्बेडकर सोले
केन्द्रीय विश्वविद्यालय, राजस्थान

प्रधान संपादक
डॉ. विनय कुमार शर्मा
अध्यक्ष
संचार एजुकेशनल एण्ड रिसर्च फाउण्डेशन, लखनऊ

संचार एजुकेशनल एण्ड रिसर्च फाउण्डेशन, लखनऊ (उ०प्र०), भारत द्वारा प्रकाशित

CONTENTS

S. No.	Topic		Page No.
1.	आज का भारत और तुलसी का समाज–दर्शन	डॉ0 अनिल कुमार राय	1
2.	शिक्षा का वर्तमान परिदृश्य और सूचना तकनीकी की प्रासंगिकता	डॉ0 अर्चना त्रिपाठी	5
3.	'आंचलिकता की चाशनी में क्रांति बीज बलचनमा'	डॉ0 संजय प्रसाद	8
4.	डॉक्टर अंबेडकर एवं दलित चेतना	डॉ0 विकास सिंह	11
5.	भारतीय समाज पर सामाजिक मीडिया का प्रभाव	डॉ0 श्रीमती हेमलता बोरकर वासनिक	14
6.	स्त्री अस्मिता का चिंतन और मीरा की जागरूकता	डॉ. फिरोजा जाफ़र अली श्रीमती मीनाक्षी रॉय	21
7.	दिल्ली सल्तनतकालीन मेरठ के पुरातात्विक स्थल	मुकेश चौधरी अंशु त्यागी	24
8.	कोरोनाकाल में सोशल मीडिया और फेक न्यूज : एक अध्ययन	डॉ0 प्रशांत कुमार राय	28
9.	आपातकालीन हिंदी–काव्य में व्यंग्य–बोध	डॉ0 अशोक कुमार ज्योति	32
10.	निशांतकेतु की कहानियों में दांपत्य–विघटन में नारी की भूमिका	डॉ0 शीला देवी	36
11.	घरेलू हिंसा से महिलाओं का संरक्षण अधिनियम में प्रदत्त अनुतोष एवं क्रियान्वयन	डॉ. अनिला डॉ. लाला राम जाट	39
12.	चलिष्णुता एवं गतिशीलता घृणा–जनित अपराधों के कारण छिन्न भिन्न होता एक मानव अधिकार	रुद्रांशु सिंह	45
13.	गांधीवादी अर्थशास्त्र	डॉ0 श्याम कुमारी दुबे	50
14.	प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षक–शिक्षिकाओं के कृत्य संतोष एवं वैज्ञानिक अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन	योगेश कुमार पाल डॉ0 राजेश पालीवाल	55
15.	साहित्य, समीक्षा और पत्रकारिता	मनीष तोमर	60
16.	कक्षा 9 वीं के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर परम्परागत शिक्षण की प्रभावशीलता का अध्ययन	पिंकी मंसूरी डॉ0 जयदीप महार	64
17.	महेंद्र भीष्म के 'किन्नर कथा' उपन्यास में किन्नर संवेदना	डॉ. (श्रीमती) सविता मिश्रा अन्तिमा गुप्ता	69
18.	वस्तु एवं सेवा कर अधिनियम के अंतर्गत इनपुट टैक्स क्रेडिट (ITC) एवं इसका व्यापारियों पर प्रभाव	प्रगति पाण्डेय	72
19.	गांधी और सत्याग्रह	डॉ0 अजय पाल सिंह	76
20.	सन् 1857 की क्रांति के संदर्भ में सीतापुर के महानायकों का योगदान : एक ऐतिहासिक विवेचन	डॉ0 सुरेन्द्र कुमार दीक्षित	79

ISSN - 2229-3620
APPROVED UGC CARE
SID

SHODH SANCHAR BULLETIN
Vol. 10, Issue 39, July-September 2020
Page Nos. 76-

AN INTERNATIONAL BILINGUAL PEER REVIEWED REFEREED RESEARCH JOURNAL

गांधी और सत्याग्रह

❑ डॉ. अजय पाल*

शोध सारांश

आज सम्पूर्ण विश्व में आदर्श राजनीति अंतिम साँसें ले रही है। पतनोन्मुख नैतिक आदर्श रसातल पर पहुँच गये हैं। मानवता उद्विकास के सिद्धान्त का शिकार हो गया है। साम्राज्यवादी सोच किसी न किसी रूप में हावी हो चुका है। ऐसे में गांधीवाद एक विचारधारा है जो टिकाऊ, विश्वसनीय और सदैव प्रासंगिक प्रतीत होता है। गांधीवाद शब्द आते ही जेहन में सत्य और अहिंसा का उभरता है। गांधी जी के सत्य और अहिंसा को यदि एक शब्द में अभिव्यक्त करना हो तो 'सत्याग्रह' से बेहतर कोई अन्य शब्द नहीं सकता है। गांधी जी की आत्मकथा ही है 'सत्य के प्रयोग'। यदि गम्भीरता से देखा जाए तो गांधी जी का सम्पूर्ण जीवन ही सत्य प्रयोगशाला रहा। चाहे ब्रिटेन में विधि की शिक्षा ग्रहण करते समय पश्चिम की भौतिकवादी वातावरण में अपनी संस्कृति व मर्यादाओं बचाए रखने का संघर्ष हो, चाहे दक्षिण अफ्रीका में काले वर्ण के लोगों के मानवाधिकार की रक्षा का संघर्ष हो। भारत में अंग्रेजी सत्ता द्वारा भारत के शोषण के विरूद्ध संघर्ष हो या अछूतोद्धार के लिये अपनों से संघर्ष; गांधी जी ने सत्याग्रह के बल पर वो सब कर दिखाया हजारों बंदूक की नलियाँ न कर सकीं। गांधी जी के मौन में बारूद के धमाके से ज्यादा शोर था। आज विश्व में ऐसा कोई देश नहीं और न ही व्यक्ति है, जिसके लिये सत्याग्रह अप्रासंगिक हो। फिर चाहे वह मन में चलने वाले अच्छे–बुरे का अंतर्द्वंद्व हो या समाज के उत्थान का संघर्ष हो या फिर बुराई के खिलाफ संघर्ष हो; गांधी का सत्याग्रह सदैव प्रासंगिक बना हुआ है।

Keywords : सत्याग्रह, प्रासंगिक, गांधीवाद, सत्य, अहिंसा, प्रयोगशाला।

गांधी जी के अनुसार 'सत्याग्रह' का अर्थ है, जिसे हम सत्य समझते हैं, उसे मरण–पर्यन्त न छोड़ना, सत्य के लिये चाहे जितनी तकलीफें उठानी पड़े, सब उठाना। कष्ट किसी को नहीं पहुँचाना चाहिए, क्योंकि कष्ट पहुँचाने से सत्य का उल्लंघन होता है। इतना सब सहने की शक्ति आ जाना ही सच्ची जीत है।[1] ... सीधी–सादी भाषा में कहें तो यह वस्तुतः बुराई का उत्तर बुराई से न देकर उससे धैर्यपूर्वक लड़ना है। इसलिये इस संघर्ष में हिंसा करने या डराने–धमकाने का कोई सवाल नहीं उठता।[2] सत्याग्रह का आधार तो केवल त्याग और तपस्या है।[3] सत्याग्रह का आधार सत्य हैं। वह एक ऐसा अस्त्र है, जिसका प्रभावकारी उपयोग केवल वे ही कर सकते हैं, जो कभी रक्तपात पर विश्वास नहीं रखते।[4] अर्थात् किसी भी परिस्थिति में सत्य पर आरूढ़ रहना ही सत्याग्रह है।[5] सत्याग्रही विवेकपूर्वक तथा स्वेच्छा से समाज के नियमों का पालन करता है, क्योंकि वह इसे अपना पवित्र कर्तव्य समझता है। समाज के नियमों का इस प्रकार पालन करने से ही वह ऐसी स्थिति में आ पाता है कि यह निर्णय कर सके कि कौन से नियम न्यायोचित हैं और कौन से अनुचित।[6] सत्याग्रह पर अमल करते हुए मुझे शुरू के चरणों में ही यह लग गया था कि सत्य के अनुकरण में विरोध पर हिंसक वार करने की अनुमति नहीं है बल्कि उसे धैर्य तथा सहानुभूमि से अपनी गलती को दूर करने के लिये प्रेरित करना चाहिए।[7] वास्तव में सत्याग्रह सत्य की अथक खोज और उस तक पहुँचने का दृढ़ संकल्प है।[8] सत्याग्रही के लिये समय की कोई सीमा नहीं होती, न उसकी पीड़ा योग की क्षमता की कोई सीमा होती है। इसलिये सत्याग्रह में पराजय नाम की कोई चीज नहीं है।[9] मेरा परामर्श एकमात्र सत्य पर अवलंबित रहने का है। आजादी प्राप्त करने का कोई अन्य अथवा बेहतर उपाय नहीं है।[10] मेरी दृष्टि में सत्याग्रह दुनिया के सर्वाधिक सक्रिय बलों में से एक है। यह सूर्य की भांति है, जो हर रोज बिना नागा के ऊपर चमकता है। अगर हम समझ पाये तो सत्याग्रह करोड़ों सूर्यों से भी अत्यधिक तेजस्वी है। यह जीवन और प्रकाश तथा सुख एवं शांति का प्रसार करता है।[11] गांधी जी पुरजोर यह कहते हैं कि 'सत्याग्रह' शब्द का अक्सर बिना विचारे ही प्रयोग किया जाता है, और उसमें छिपी हुई हिंसा का भी समावेश रहता है। पर इस 'सत्याग्रह' शब्द के निर्माता की हैसियत से मैं यह कहना चाहूँगा कि इसमें प्रत्यक्ष या परोक्ष, गुप्त प्रकार की हिंसा की गुंजाइश नहीं है। विरोधी का बुरा चाहना या उसका दिल दुखा

*सहायक प्राध्यापक – इतिहास, राजीव गांधी शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, अम्बिकापुर, जिला सरगुजा, छ.ग.

के इरादे से उसे या उसके प्रति कठोर वचन कहना सत्याग्रह की मर्यादा का उल्लंघन है।[12] दरअसल सत्याग्रह तो सर्वोपरि है। वह शस्त्र बल की अपेक्षा अधिक काम करता है, तो फिर भला उसे निर्बल का हथियार कैसे गिन सकते हैं? सत्याग्रह के लिये जिस हिम्मत और मर्दानगी की जरूरत पड़ती है, वह शस्त्र बल वाले के पास हो ही नहीं सकती।[13] सत्य को अहिंसा से जोड़ कर तुम संसार को अपने चरणों में झुका सकते हो। सत्याग्रह की मूल भावना राजनीति और राष्ट्र के जीवन में एकमात्र सत्य और नम्रता का प्रवेश कराना है।[14] अहिंसा की शक्ति को समझाते हुए गांधी जी ने लिखा कि "अहिंसा आत्मबल या हमारे भीतर बसे हुए अंतर्यामी की शक्ति है। अपूर्ण मनुष्य उस शक्ति को सम्पूर्ण रूप से नहीं पहचान सकता परन्तु उसका अतिसूक्ष्म अंश भी जब हमारे भीतर सक्रिय हो जाता है तो वह चमत्कार कर दिखाता है... आत्मा मृत्यु के बाद भी बनी रहती है, उसका अस्तित्व भौतिक शरीर पर निर्भर नहीं करता। ...वह देशकाल से परे है। इसलिये यह निष्कर्ष निकलता है कि अहिंसा एक स्थान में स्थापित हो जाती है, तो उसका प्रभाव सर्वत्र फैल जाता है।"[15] अहिंसा की शक्ति में अपनी अटूट आस्था की वहज बताते हुए गांधी जी लिखते हैं कि "अहिंसा में मेरा विश्वास इस धारणा पर खड़ा हुआ है कि मानव–स्वभाव वास्तव में एक ही है और इसलिये प्रेम का प्रभाव उस पर पड़े बिना नहीं रह सकता।"[16]

गांधी जी के सत्याग्रही यात्रा को समझना भी समीचीन होगा। दक्षिण अफ्रीका में रंगभेद और भारतीयों पर होने वाले अत्याचार के विरोध ने सन् 1906 में गांधी के सत्याग्रह की उत्पत्ति की। यह सत्याग्रह विजयी हुआ। सन् 1917 में चंपारण (बिहार) में तीन कठिया पद्धति के खिलाफ नील सत्याग्रह किया गया। यह भी सफल रहा। सन् 1918 में अहमदाबाद मिल मजदूर सत्याग्रह व खेड़ा (गुजरात) में अकाल पीड़ित किसानों के सत्याग्रह का परिणाम भी सत्याग्रह के विजय पर समाप्त हुआ। सन् 1919 का रौलट एक्ट, खिलाफत आन्दोलन और फिर सन् 1920 का असहयोग आन्दोलन भी गांधी जी के सत्याग्रह की मिसाल प्रस्तुत करता है। यहाँ यह उल्लेखनीय है कि चौरी–चौरा काण्ड के बाद अपने पूरे रंग में रंगे असहयोग आन्दोलन को अचानक स्थगित करने की हिम्मत और निर्णयोपरांत आलोचना को सहर्ष स्वीकारने की ताकत गांधी जी के सत्याग्रही स्वभाव का ही परिणाम था। सन् 1924 में वायकोम (केरल) में हरिजनों (तथाकथित दलित) को मंदिर में प्रवेश करने के अधिकार को लेकर गांधी जी ने अत्यंत मानवीय सत्याग्रह किया। इसकी परिणति भी सकारात्मक ही रही। सन् 1930 में प्रत्येक मनुष्य के जीवन के अभिन्न हिस्से नमक को लेकर उन्होंने नमक सत्याग्रह छेड़ा जो सविनय अवज्ञा आन्दोलन में तब्दील हो गया। इस सत्याग्रह में गांधी जी को पहली बार बड़ा झटका लगा। इसे दूसरों (अंग्रेजों) ने नहीं अपनों (भारतीयों) ने ही असफल कर दिया। गांधी जी ने महसूस किया कि जिन मनुष्यों के लिये गांधी जी सत्याग्रह कर रहे हैं, वे आपस में ही फूट कर टूट चुके हैं। अब उन्होंने लोगों को जोड़ने का काम शुरू कर दिया। कालांतर में सन् 1940 में व्यक्तिगत सत्याग्रह और फिर सन् 1942 का स्वतःस्फूर्त भारत छोड़ो आन्दोलन गांधी जी के जीवनकाल में सत्याग्रह की चरम परिणति के रूप में सामने आई। अमेरिका सहित अन्य देशों ने गांधी जी के सत्याग्रह की शक्ति और उसकी अनिवार्यता को महसूस किया। उन्होंने ब्रिटेन पर दबाव डाला। साथ ही ब्रिटेन के लोगों का भी हृदय परिवर्तन हुआ। फलतः 15 अगस्त, 1947 को भारत आजाद हो गया।[17]

आज आजादी को 73 साल हो गये। इन 73 सालों में गुलामी के झंझावातों से गरीब, शोषित व पिछड़ा भारत आज विकासशील हो विकसित राष्ट्र बनने की ओर उन्मुख दिखता है। इन 73 सालों में गांधी जी का सत्याग्रह कहाँ रहा? इस पर विचार करना चाहिए। गौर करने वाली बात यह है कि जिस संविधान से भारत का शासन संचालित हो रहा है, उसमें गांधी जी का सत्याग्रह परिलक्षित होता है। स्वतंत्रता, समानता और कालांतर में पंचायती राज की स्थापना में गांधी जी का सत्याग्रह प्रासंगिक और सफल दिखाई देता है। हालांकि बदलते दौर में भारत–पाक व भारत–चीन युद्ध ने गांधी जी के सत्याग्रह पर प्रश्नचिह्न लगा दिया। वैश्वीकरण के बाजारवाद से पूरी तरह प्रभावित युवा पीढ़ी ने सत्याग्रह को नकारना शुरू कर दिया। 21वीं शताब्दी तो जबरदस्त गलाकाट प्रतिस्पर्द्धा से भरा पड़ा है। येन–केन–प्रकारेण स्वार्थसिद्धि साधने में पूरा विश्व लगा हुआ है। यही वजह है कि आज हर व्यक्ति स्वयं को असुरक्षित महसूस करता है। आजादी के इतने वर्षों बाद आज भी भारत में समानता–असमानता का मुद्दा ज्वलंत समस्या बना हुआ है। कारणों पर नजर डालें तो कहीं न कहीं गांधी जी का सत्याग्रह इन तमाम समस्याओं का समाधान पूरी तरह प्रस्तुत करता प्रतीत नहीं हो पाता है। चिपको आन्दोलन व नर्मदा बचाओ जैसे आन्दोलनों की सफलता सत्याग्रह की शक्ति का प्रदर्शन करते हैं। साथ ही यह भी विचारणीय है कि यदि विश्व की सर्वोच्च संस्था के रूप में मान्य संयुक्त राष्ट्र महासभा ने गांधी जी के जन्मदिवस (02 अक्टूबर) को प्रतिवर्ष 'अंतर्राष्ट्रीय अहिंसा दिवस' मनाने का निर्णय लिया और क्रियान्वयन भी किया तो यह स्वमेव प्रमाणित कर देता है कि विश्व और मानवता के लिये गांधी और उनका जीवन दर्शन सत्याग्रह प्रासंगिक है। लेकिन बदलती परिस्थितियों में गांधी जी का सत्याग्रह विभिन्न प्रयासों में से एक प्रयास हो सकता है; अंतिम या एकमात्र नहीं।

अंततः यह सवाल जो प्रायः लोगों के दिलोदिमाग में उठता है कि क्या इक्कीसवीं सदी की मूलभूत चुनौतियों से निपटने के लिये सत्याग्रह प्रासंगिक है? आज आतंकवाद, परमाणु युद्ध के खतरे, तेजी से फैलता किन्तु अन्यायपूर्ण वैश्वीकरण, जलवायु परिवर्तन, इकोलॉजिकल ह्रास, गैर बराबरी और लोकतांत्रिक

राष्ट्रों में सिमटता नागरिक अधिकार जैसे गंभीर सवाल विश्व के सामने हैं। हालांकि इस सवाल का सीधा जवाब देना गांधी के सत्याग्रह के साथ अन्याय होगा। दरअसल सत्याग्रह की प्रासंगिकता को हृदयंगम करने के लिये गांधी जी के विचार को एक अल्पकालीन व दीर्घकालीन प्रक्रिया के रूप में देखा जाना चाहिए। सत्याग्रह एक प्रयास है जिसके असरदार होने में समय लगता है। कुछ समस्याओं के लिये यह हल हो सकता है किन्तु आतंकवाद के खिलाफ अथवा स्वयं को सशक्त व समर्थ राष्ट्र बनाने के लिये गांधी जी का सत्याग्रह अव्यवहारिक लगता है। गांधी जी के सत्याग्रही प्रयोगों को परिस्थितियों के अनुसार दोहराया जा सकता है लेकिन सत्याग्रह आज की सभ्यता और समाज में निहित बुराइयों और कमजोरियों व समस्याओं को स्थाई रूप से दूर नहीं कर सकता है। गांधी जी ने स्वयं कहा था– "मैंने सत्याग्रह के विज्ञान को पूरी तरह से स्थापित नहीं किया, इसमें परिष्कार और सुधार की बहुत गुंजाइश है।" उन्होंने कहा था– "सत्याग्रह इज साइंस इन द मेकिंग।"[18]

यह तो निर्विवाद है कि विश्व की सबसे बड़ी साम्राज्यवादी सत्ता जो बम और बारूद से नहीं डरी वह गांधी जी के सत्याग्रह से विचलित हो जाया करती थी। यह सत्य है कि सत्याग्रह की राह आसान नहीं है और न ही वर्तमान बदलती परिस्थितियों से जुड़ी समस्याओं का एकमात्र हल। किन्तु इस बात से भी इनकार नहीं किया जा सकता यदि गांधी बनने का साहस और धैर्य हो तो आज भी गांधी के सत्याग्रह में असंभव को संभव बनाने की संभावना है। इसलिये राष्ट्रकवि दिनकर को कहना पड़ा–[19]

"बापू ने राह बना डाली, चलना चाहे संसार चले।
डगमग होते हों पांव अगर तो पकड़ प्रेम का तार चले।"

सन्दर्भ :–

1. इंडियन ओपिनियन, 26 सितम्बर, 1908.
2. नेटाल मर्करी, 06 जनवरी, 1909.
3. इंडियन ओपिनियन, 13 दिसम्बर, 1909.
4. इंडियन ओपिनियन, 07 अक्टूबर, 1911.
5. इंडियन ओपिनियन, 28 अक्टूबर, 1911.
6. यंग इंडिया, 01 अक्टूबर, 1925, पृष्ठ क्रमांक 338.
7. हरिजन, 03 अक्टूबर, 1936, पृष्ठ क्रमांक 268.
8. यंग इंडिया, 03 सितम्बर, 1926, पृष्ठ क्रमांक 336.
9. हरिजन, 17 नवम्बर, 1933, पृष्ठ क्रमांक 04.
10. यंग इंडिया, 03 दिसम्बर, 1925, पृष्ठ क्रमांक 422.
11. यंग इंडिया, 26 अप्रैल 1921, पृष्ठ क्रमांक 224.
12. सम्पूर्ण गांधी वांगमय, ,खण्ड 54, पृष्ठ क्रमांक 445–446
13. सम्पूर्ण गांधी वांगमय, ,खण्ड 10, पृष्ठ क्रमांक 49..
14. यंग इंडिया, 10 मार्च, 1920.
15. हरिजन, 12 नवम्बर, 1938, पृष्ठ क्रमांक 326–327.
16. हरिजन, 24 दिसम्बर, 1938, पृष्ठ क्रमांक 394–395.
17. http://hi.m.wikipedia.org
18. http://www.bbc.com
19. http://from satyagrah.scroll.in